वर्षा के बाद

आज बुधवार है प्रयास के बच्चे (कॉलोनी के Servant Quater के) हर हफ्ते दो घण्टे अपनी मुस्कुराहट बिखेरने मेरे पास आते है ये समय मुझमें स्फूर्ति का संचार करता है किन्तु दीदी के इस फोन ने मानो निराशा के कुहासे मन के ढक दिया।

''मैडम चाय रखी है शाम को लेट आऊँगी'' कहकर सविता, मेरे उत्तर की प्रतीक्षा किये बिना चली गई खाने की मेज पर रखे चाय के प्याले में उठती हई भाप और मन में उमड़ता विचारों का गुबार, सब जैसे एकाकार हो रहा था। अभी 90 मिनट पहले सब ठीक था पर दीदी के फोन ने हृदय को सोचने पर विवश कर दिया। फोन पर उनका बार बार कहना कि, '' मैंने तो बहू को बेटी ही माना तो फिर उसने मुझे बाते क्यों सुनाई?'' सुनने में तो ये हर घर में होने वाल बात है पर मेरा मन इस तर्क वितर्क में फँसा है कि हमारी बहू बेटी की तरह क्यों बहू को बहू के रूप में प्रेम नहीं दिया जा सकता ? क्या हम बार बार बहू को बेटी मानने की बात कहकर अपने किसी अपराध बोध को तो नहीं छुपा रहे है ? या फिर यही बदलते युग की परिभाषा हैं। निढाल की सोफे पर लेटी इसी उधेडबुन में थी कि दो महीने बाद हेमन्त की शादी है खुशी के माहौल में भी अनहोनी आशंका दिल को कचोटती रहती हे कि क्या मैं 'सास' की भूमिका में खरी उतर पाऊँगी? दीदी मृदुल स्वभाव की है फिर भी नई पीढ़ी से तारतम्य नहीं बैठा सकी फिर मैं तो.....

हेमन्त कहने लगा माँ नाहक घबराती हो शिखा बहुत ही समझदार है फिर मैं तो तुम्हारा अपना खून हूँ। ''रहने दे बीबी के आने पर सब बदल जाते हैं'' समझदार है कहकर तू अभी से शिखा की पैरवी कर रहा है ''मनोज भुझला गये'' ज्योति जो घटना घटी नहीं, उसे लेकर परेशान हो रही हो। उन्हें क्या बताऊँ औरते आने वाले खतरो को सहजता से भाँप लेती है। शिखा बोल उठी, ''माँ'' मैं हूँ ''बहू'' यानि हूबहू आपकी तरह। आपकी तरह ही मुझे भी इस कुल की परम्परा को वहन करना हे। मैं नई पीढी की नई सीढी हूँ ''अरे! ये क्या शिखा ने हमारे घर की बाते कैसे सुन ली कहीं मैने ही अपनी उलझनों की सिलवटे उसके कोरे मन पर नहीं डाल दी ? कह रही थी ''माँ '' आप वो केन्द्र हो जिसकी धुरी के वर्षा दीदी जन्म से और मैं कर्म से जुड़े हैं। वर्षा दीदी आपके शादी के पहले की छवि है तो मैं आपके शादी के बाद के रूप का प्रतिबिम्ब बनने का प्रयास करुंगी बेटी कहे या बहू दोनो रिश्ते तो है दिल के ही ना सच माँ मैं तो इस ममतामयी ज्योति की ही दीप शिखा हूँ। नारी ने बेटी, बहन, पत्नी, माँ, सभी रिश्तों से स्वंय अलंकृत किया है तो फिर सास बहू के रिश्ते में हिचक कैसी? रिश्ता की भाषा बदलने से प्रेम की परिभाषा थोड़े ही बदल जायगी।

दरवाजे की घण्टी की आवाज से हडबडाकर उठी, पता ही नही चला कब आँख लग गई दरवाजा खोला, मनोज खड़े थे, कह रहे थे ''देखो! किसको साथ लाया हूँ?बारिश की वजह से जल्दी ऑफिस से निकला तो बंगाली मार्केट से गरमा गरम समोसे पैक करावा लिये कि चाय के साथ खायेगें, तभी शिखा मिल गई।'' समाने शिखा, हल्के आसमानी रंग मे सफेद चिकन की कढ़ाई वाले सूट मे मुस्कुरा रही थी मानो वर्ष के बाद धुले स्वच्छ आसमान की नीलीमा आंगन उतरी है। मैं सकपका गई ये स्वप्न है या वो स्वप्न था?

शिखा ने कहा, माँ आप बैठिये, मैं चाय बनाती हूँ , मैनें अभी लंच नही किया है।'' उसकी खनकती अवाज ने अकांशा के बादलो को ढकेल दिया और 'अदरक' की खुशबू ने सुनहरे 'कल' को अवाज दी। याद आया दस साल पहले का हश्य जब वर्षा स्कूल बैग पटकते ही शोर मचाती माँ खाने मे क्या बनाया है, जोरो की भूख लगी है। उस समय मुझमे भी स्फूर्ति थी पर आज उम्र के इस मुकाम पर मुझमे सहयोग की जरूरत है तो वही नन्ही परी 'समझदार शिखा के रूप मे इन्तज़ार कर रही है मेरी खुली बॉहों का जो उसकी खुबियों व खामियों को समेट ले मैनें शिखा को गले लगा लिया। तो मनोज ने शरारती अवाज मे कहा, '' सारा प्यार चाय बनाने वाले को? समोसे वाले को कुछ नहीं? ये तो नाइन्साफी है।'' ''तुमभी न बिना सोचे समझे कुछ भी बोल देते हो'' कहते हुऐ मैनें शिखा की ओर देखा तो मुझ जैसी शर्म व प्यार की लालिमा उसके गालो को भी रंग रही थी।

राजश्री महोता
साऊथ जोन